الصُّدُوۡرِ ۙ﴿۱۰﴾ اِنَّ رَبَّہُمۡ بِہِمۡ یَوۡمَئِذٍ لَّخَبِیۡرٌ ﴿۱۱﴾ ع

सीनों में है बेशक उन के रब को उस दिन[10] उन की सब ख़बर है[11]

ع ۱۵

اٰیاتُہا ۱۱ | ۱۰۱ سُوۡرَۃُ الۡقَارِعَۃِ مَکِّیَّۃٌ ۳۰ | رُکوعُہا ۱

सूरए क़ारिअ़ह मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़म वाला[1]

اَلۡقَارِعَۃُ ۙ﴿۱﴾ مَا الۡقَارِعَۃُ ۚ﴿۲﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰىکَ مَا الۡقَارِعَۃُ ؕ﴿۳﴾

दिल दहलाने वाली क्या वोह दहलाने वाली और तू ने क्या जाना क्या है दहलाने वाली[2]

یَوۡمَ یَکُوۡنُ النَّاسُ کَالۡفَرَاشِ الۡمَبۡثُوۡثِ ۙ﴿۴﴾ وَ تَکُوۡنُ الۡجِبَالُ کَالۡعِہۡنِ

जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतंगे[3] और पहाड़ होंगे जैसे धुन्की (धुनी हुई)

الۡمَنۡفُوۡشِ ؕ﴿۵﴾ فَاَمَّا مَنۡ ثَقُلَتۡ مَوَازِیۡنُہٗ ۙ﴿۶﴾ فَہُوَ فِیۡ عِیۡشَۃٍ

ऊन[4] तो जिस की तोलें भारी हुईं[5] वोह तो मन मानते ऐश में

رَّاضِیَۃٍ ؕ﴿۷﴾ وَ اَمَّا مَنۡ خَفَّتۡ مَوَازِیۡنُہٗ ۙ﴿۸﴾ فَاُمُّہٗ ہَاوِیَۃٌ ؕ﴿۹﴾ وَ مَاۤ

है[6] और जिस की तोलें हलकी पड़ीं[7] वोह नीचा दिखाने वाली गोद में है[8] और तू

اَدۡرٰىکَ مَا ہِیَہۡ ؕ﴿۱۰﴾ نَارٌ حَامِیَۃٌ ﴿۱۱﴾ ع

ع ۱۶

ने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली एक आग शो'ले मारती[9]

---

10 : या'नी रोज़े क़ियामत जो फ़ैसले का दिन है। **11 :** जैसी कि हमेशा है, तो उन्हें आ'माले नेक व बद का बदला देगा। **1 :** सूरए "अल क़ारिअ़ह" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, छत्तीस कलिमे, एक सो बावन ह़र्फ़ हैं। **2 :** मुराद इस से क़ियामत है जिस की होल व हैबत से दिल दहलेंगे और "क़ारिअ़ह" क़ियामत के नामों से एक नाम है। **3 :** या'नी जिस त़रह पतंगे शो'ले पर गिरने के वक़्त मुन्तशिर होते हैं और उन के लिये कोई एक जिहत मुअ़य्यन नहीं होती हर एक दूसरे के ख़िलाफ़ जिहत से जाता है, येही ह़ाल रोज़े क़ियामत ख़ल्क़ के इन्तिशार का होगा। **4 :** जिस के अज्ज़ा मुतफ़र्रिक़ हो कर उड़ते हैं, येही ह़ाल क़ियामत के होल व दहशत से पहाड़ों का होगा। **5 :** और वज़्न दार अ़मल या'नी नेकियां ज़ियादा हुईं **6 :** या'नी जन्नत में। मोमिन की नेकियां अच्छी सूरत में ला कर मीज़ान में रखी जाएंगी तो अगर वोह ग़ालिब हुईं तो उस के लिये जन्नत है और काफ़िर की बुराइयां बद तरीन सूरत में ला कर मीज़ान में रखी जाएंगी और तोल हलकी पड़ेगी क्यूं कि कुफ़्फ़ार के आ'माल बात़िल हैं, उन का कुछ वज़्न नहीं, तो उन्हें जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा। **7 :** ब सबब इस के कि वोह बात़िल का इत्तिबाअ़ करता था **8 :** या'नी उस का मस्कन आतशे दोज़ख़ है। **9 :** जिस में इन्तिहा की सोज़िश व तेज़ी है। अल्लाह तआ़ला उस से पनाह में रखे।

www.dawateislami.net